~~Chapter - 1~~ Content

प्रथम अध्याय

बौद्ध - परम्परा का संक्षिप्त ऐतिहासिक परिचय

1- पूर्व-कथन

2- प्रवर्त्तक

3- शाक्य - मुनि का संक्षिप्त जीवन-वृत्त

4- मूल बौद्ध - साहित्य

5- भगवान बुद्ध के प्रमुख शिष्य

6- संघ की स्थापना एवं संरचना

7- संघ में मत-भेद

8- प्रथम संगीति

9- द्वितीय संगीति

10- तृतीय संगीति

11- चतुर्थ संगीति

12- बौद्ध-धर्म के तीन यान

13- दार्शनिक - सम्प्रदाय

14- तान्त्रिक यान

15- बौद्ध सिद्ध

16- उत्तर - मध्यकाल में बौद्ध-धर्म की स्थिति पर पुनर्विचार

17- धर्मान्तरण

18- रूपान्तरण

19- सारांश

.....

द्वितीय अध्याय

बौद्ध - धर्म - दर्शन एवं साधना

1- प्रस्तावना

2- मध्यम - प्रतिपदा

3- चार आर्य सत्य - दुःख, दुःख समुदय (काम तण्हा, भव तण्हा, विभव तण्हा), दुःख निरोध तथा दुःख निरोध गामिनी प्रतिपदा

4- आर्य अष्टांगिक मार्ग - सम्यक् दृष्टि, सम्यक् संकल्प, सम्यक् वाचा, सम्यक् कर्मान्त, सम्यक् आजीविका, सम्यक् प्रयत्न, सम्यक् स्मृति, सम्यक् समाधि ।

5- त्रिशरण - बुद्ध, धर्म, संघ

6- द्वादश - निदान (भव चक्र)

7- पंचशील

8- ब्रह्मविहार

9- बौद्ध - चिन्तन - आध्यात्मिक चिन्तन के प्रति भगवान बुद्ध की उदासीनता (अव्याकृत प्रश्न), पदार्थ मीमांसा, प्रतीत्य समुत्पाद, क्षणभंगवाद, अनात्मवाद, अनीश्वरवाद, निर्वाण ।

10- बौद्ध - धर्म के चार दार्शनिक सम्प्रदाय - वैभाषिक, सौत्रान्तिक, विज्ञानवाद (अथवा योगाचार) माध्यमिक (अथवा शून्यवाद) ।

11- बौद्ध - दार्शनिकों का सत्य विषयक चिन्तन - सांवृतिक सत्य, पारमार्थिक सत्य

12- बौद्धों के तांत्रिक दर्शन व उनके चार यान - मंत्रयान, वज्रयान, सहजयान, कालचक्रयान

13- बौद्धों का कार्यसिद्धान्त

14- ब्राह्मण परम्परा से विरोध - वर्ण व्यवस्था का विरोध, ब्राह्मण धर्म का विरोध, वैदिक देवताओं की अप्रमाणता, वैदिक हिंसा अथवा यज्ञ का विरोध ।

15- बौद्धों की योग साधना - बौद्ध - ध्यान योग, महायानयोग, बौद्ध-तांत्रिक योग

Content

तृतीय अध्याय

मध्यकालीन कृष्ण - भक्ति का स्रोत, स्वरूप एवं परम्परा

1- पूर्वकथन

2- भक्ति के स्रोत विषयक प्रचलित मान्यताएं -

I : अभारतीय स्रोत

II : भारतीय स्रोत

3- भक्ति के प्राचीन व मध्यकालीन सम्प्रदाय तथा उनके सम्बन्धों पर पुनर्विचार -

I : श्री सम्प्रदाय और रामानन्दी सम्प्रदाय

II : ब्रह्म सम्प्रदाय और गौड़ीय सम्प्रदाय

III : रुद्र-सम्प्रदाय और पुष्टिमार्ग सम्प्रदाय

IV : सनक सम्प्रदाय और राधावल्लभीय तथा हरिदासी सम्प्रदाय.

निष्कर्ष

4- भक्ति का स्वरूप

5- बौद्ध राग साधना का स्वरूप - प्रज्ञोपाय, तुलनात्मक निष्कर्ष

6- अनुत्तर पूजा

7- गुरु

8- बौद्ध तांत्रिक रागसाधना की प्राचीन परम्परा - बौद्ध तांत्रिक सिद्ध

9- बौद्ध तांत्रिक रागसाधना की अर्वाचीन परम्परा - वैष्णव सहजिया - जयदेव, विद्यापति, चण्डीदास

10- उत्कल के पंचसखा

11- सारांश ।

....

Content

चतुर्थ अध्याय

गौड़ीय कृष्ण - भक्ति काव्य पर बौद्ध - धर्म का प्रभाव

1. पूर्वकथन

2. महाप्रभु चैतन्य देव का संक्षिप्त परिचय

3. गौड़ीय सम्प्रदाय के प्रमुख कवि एवं आचार्य

4. बौद्ध धर्म का प्रभाव -

   संन्यास का समर्थन

   वर्णाश्रम व्यवस्था को अमान्यता

   अवतारवाद तथा मूर्ति - पूजा

   गुरू की सर्वोच्चता

   दुःखवाद अथवा निराशावाद

   शरणागति

   कर्मनिन्दा

   कामनिन्दा

5. साधना पक्ष -

   परकीया भाव

   रागमार्ग

   संकीर्तन, भजन नृत्य तथा वाद्य

   अद्वैतभाव अथवा समरसता

6. सारांश

पंचम अध्याय

Content

पुष्टिमार्गीय कृष्ण - भक्ति काव्य पर बौद्ध धर्म का प्रभाव

1। पुष्टिमार्ग का संक्षिप्त परिचय -
संस्थापक, प्रमुख भक्त एवं कवि और उनका साहित्य ।

2। स्पष्टीकरण

3। बौद्ध परम्परा से पुष्टिमार्ग का सम्बन्ध

4। पुष्टिमार्ग पर बौद्ध धर्म परम्परा का प्रभाव -
व्यक्तिवाद, संन्यास का समर्थन, दु:खवाद, निराशावाद,
क्षणभंगुरवाद, शरीरनिंदा, सामाजिक सम्बन्धों की निन्दा,
भाग्यवाद, भव।पुनर्जन्म।, मनोराज्य, चार ब्रह्म विहार,
प्रवृत्ति लक्षण- धर्म का विरोध

5। बौद्ध धर्म का पुष्टिमार्गी साधना पर प्रभाव -
बौद्धों की अनुत्तर पूजा और कृष्ण भक्ति काव्य में वर्णित नवधा भक्ति,
मूर्ति पूजा, गुरु भक्ति, अवतारवाद

6। बौद्ध तांत्रिक रागसाधना तथा पुष्टिमार्गी कृष्ण भक्ति में रागतत्त्व -
कृष्ण व राधा का अद्वय स्वरूप, भोग में योग, परकीया प्रेम,
प्रेम की लज्ज भावना का समर्थन, श्रीकृष्ण प्रत्येक नारी ।ब्रज गोपी। के पति हैं,
भुक्ति-मुक्ति प्रधान साधना, प्रेमपथ अथवा राजपथ, महासुख अथवा महारास,
विपरित रति, अमर्यादित श्रृंगार, रास

7। निर्वाण

8। सारांश

....

Content

षष्ठ अध्याय

राधावल्लभीय कृष्ण - भक्ति काव्य पर बौद्ध - धर्म का प्रभाव

1। पृष्ठ-भूमि

2। हित हरिवंशीय सम्प्रदाय के प्रमुख भक्त कवि -

स्वामी हित हरिवंश

श्री हरिराम व्यास

सेवकजी दामोदरदास

श्री चतुर्भुजदास

ध्रुवदासजी

3। बौद्ध-धर्म का प्रभाव -

संन्यास तथा वैराग्य की भावना

नाम महिमा तथा गुरू की श्रेष्ठता

वैदिक मान्यताओं की अवमानना

कर्मकाण्डों का त्याग

सामाजिक सम्बन्धों की निन्दा

अनन्यता तथा विधि निषेध

सम्प्रदायवाद

4। साधना पक्ष -

समरसता अथवा युगनद्ध

महारस अथवा मधुररस

भक्ति अथवा भोग

राग मार्ग ।गुह्य साधना।

श्रृंगार वर्णन

5। सारांश

Content

सप्तम अध्याय

हरिदासी अथवा सखी - सम्प्रदाय के कृष्ण - भक्ति काव्य पर बौद्ध - धर्म का प्रभाव

1॥ पूर्व-कथन

2॥ बौद्ध धर्म का प्रभाव -

॥1॥ संन्यास

॥2॥ व्यक्तिवाद

॥3॥ शरणागति

॥4॥ दुःखवाद

॥5॥ अनित्यतावाद

॥6॥ कामनिन्दा

॥7॥ भाग्यवाद

॥8॥ वैदिक धर्म का विरोध

॥9॥ सम्प्रदायवाद

3॥ सखी-सम्प्रदाय के साधना पक्ष पर बौद्ध-धर्म का प्रभाव -

॥1॥ गुरू की श्रेष्ठता

॥2॥ प्रेमाभक्ति अथवा राग मार्ग

॥3॥ महारस अथवा महाकेलि

॥4॥ अमर्यादित श्रृंगार

॥5॥ अद्वय स्वरूप अथवा समरसता

॥6॥ वाममार्ग

॥7॥ भुक्तिमुक्ति साधना

4॥ सारांश

Content

अष्टम अध्याय

उपसंहार